स्थानीय मान, मेरी कक्षा और मेरा सफर

– सुमन सोनी एवं शिवा दीप भट्ट

मेरा नाम सुमन सोनी है और मैं राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मवासीपुरा, पीपलू (टोंक) में कार्यरत हूं। मैं प्राथमिक कक्षाओं में गणित/ इंग्लिश शिक्षण करवाती हूँ। मैंने अपनी गणित की कक्षा–कक्ष के अनुभव को लिखने का प्रयास कर रही हूं। मुझे लगता है कि मेरे इस अनुभव से मेरी कुछ चीज़ों को लेकर काफी स्पष्ट समझ बन पायी है जो इस प्रकार है–

1. पहला यह कि एक अच्छा शिक्षक वही है जो निरंतर सीखने का प्रयास करता है और अपने काम का विश्लेषण स्वयं करता है।
2. अगर शिक्षक योजना के साथ कक्षा कक्ष में जाता है तो उसे सफलता ज़रूर मिलती है और अगर सफलता ना भी मिले तो कुछ बेहतरीन उदाहरण या एक नयी योजना बनाने के लिए नए आइडियाज तो ज़रूर ही मिलते हैं।
3. कक्षा में स्थानीय मान पर काम करने का मेरा सफ़र ऐसा रहा जिसने मुझे बहुत सी नयी बातें सीखने के लिए प्रेरित किया।

मेरे पूरे अनुभव को पढ़ते समय सभी को बीच–बीच में शायद इन तीन बातों का एहसास होगा जैसा मुझे हुआ।

कुछ समय पहले अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन की सदस्य शिवा जी, स्कूल आयी और उनसे काफी सारी बातचीत हुई। जब भी उनसे मिलना होता है तो बहुत सी पढ़ाई लिखाई की बातें होती हैं जो मुझे काफी पसंद है। कई बार तो हम किसी एक बच्चे को लेकर ही एक दो घंटे तक बात करते हैं। उसमें वो कैसे सीख रहा है, क्या अच्छा कर रहा है, कहां उसे दिक्कत आ रही है, उसके घर की क्या परिस्थिति है। उसने मुझे अपनी किस दुविधा को शेयर किया। वे भी मुझे बच्चों के साथ उनके काम के उदाहरणों और अनुभवों को साझा करती रहती है। वह मुझे हमेशा यह एहसास दिलाती हैं कि मेरा बच्चों के साथ लगाव और कुछ नया सीखने का मेरा प्रयास सराहनीय है और शायद इसे वजह से मुझे अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, टोंक द्वारा आयोजित जिला स्तरीय सेमिनार में अपने अनुभव साझा करने का मौका भी मिला।

मेरा यह अनुभव कुछ महीने पहले का है। उस दिन भी कुछ ऐसा हुआ था। मैं उनसे अपनी दुविधा और उसके समाधान की खोज को साझा कर रही थी, "पिछले साल

लॉकडाउन की वजह से हुए नुकसान की भरपाई करना बहुत मुश्किल लगता था। बच्चों के साथ कितना कुछ कार्य चुकी थी, लेकिन अब वे लगभग सब भूल गए हैं। लेकिन मैंने बच्चों के साथ 'स्माइल प्रोग्राम' के तहत आयी वर्कशीट के अलावा कुछ और काम करना भी शुरू कर दिया है। डोर टू डोर जाकर भी बच्चों के साथ काम कर रही हूँ। फिलहाल गिनती सिखाने और उसके दोहरान को लेकर मैंने ज्यादा फोकस किया।"

उन्होंने मुझसे पूछा कि मेरा तरीका क्या होता है? मैंने बताया कॉपी में गिनती डाल के बच्चों को गिनती बोल कर दोहरान करने के लिए कहती हूँ और कुछ ठोस चीज़ों की मदद से गिनने को भी बोल देती हूँ। जब भी वो मिलते हैं तो उनसे पूछती हूँ कि उन्होंने कितना याद किया है।

शिवा मैम ने मुझे गिनने से जुड़ी गतिविधियों की एक लिस्ट थमाई जिसमें गतिविधियां विस्तार से लिखी हुई थीं। जाते–जाते उन्होंने कहा कि आप हर गतिविधि के नीचे उस गतिविधि का विश्लेषण करके लिखना। विश्लेषण के बिंदु थे– इस गतिविधि से क्या फायदा होगा, हर एक गतिविधि कौन से अधिगम क्षेत्र को टारगेट करती है। मुझे यह तरीका अच्छा लगा और मैंने घर जाने के बाद इस काम को शुरू किया। मैंने हर गतिविधि को अच्छे से पढ़ा और उस पर अपनी समझ बनाने की कोशिश की और विश्लेषण करने की कोशिश भी की। इसके बाद मैंने यह असाइनमेंट करके वापस कर दिया। हमने फिर टेलीफोन के माध्यम से इन विश्लेषणों पर चर्चा की।

इसके लगभग एक हफ्ते बाद कुछ बच्चे खेलते हुए स्कूल आये तो मैंने सोचा आज इनके साथ आरोही और अवरोही क्रम पर काम करती हूं। ऐसा मैंने इसलिए किया क्योंकि हाल ही में मैंने कुछ बच्चों को आरोही और अवरोही क्रम की वर्कशीट दी थी। मेरे पास गतिविधियों को पढ़ के कुछ नए आइडियाज आये थे। पिछले साल हुई पंचायत कार्यशाला में भी हमने संख्या पूर्व अवधारणा के बारे में काफी बातचीत की थी। तो आज मैंने तय किया कि बच्चों के साथ संख्याओं में आरोही और अवरोही क्रम तथा संख्या पूर्व अवधारणा बड़ा और छोटा का आपस में कैसा रिलेशन हैं मुझे बताना चाहिए। अचानक ही मुझे आईडिया आया कि इसका एक विडियो भी तैयार किया जा सकता है और शिवा जी के साथ इसे ज़रूर शेयर करूंगी।

इस काम को करने का मेरा तरीका कुछ इस प्रकार था– 4 बच्चों को मैंने पहले कुछ संख्या काड्र्स पकड़ाये और कक्षा के सामने खड़ा होने को कहा। इस कक्षा में multi-grade और multi-level बच्चे बैठे थे। सभी को साथ बैठाया गया था और जो बच्चे बैठे थे उनको निर्देश दिया गया कि खड़े बच्चों को छोटे नंबर से बड़े नंबर के क्रम में खड़ा होना है, तुम इन्हें देखते रहना और बताना कि क्या ये सही खड़े हो रहे हैं। इसी प्रक्रिया को बड़े से छोटे के अनुसार भी किया गया और फिर इस प्रक्रिया का कुछ देर दोहराव कराया गया। इसके बाद मैंने संख्या पूर्व अवधारणा को जोड़ते हुए बच्चों को उनकी लम्बाई के अनुसार खड़े होने के लिए कहा। मैंने बच्चों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया था। मैंने नोटिस किया कि बच्चे जब अपनी लम्बाई के अनुसार खड़े हो रहे थे तो वो अपने हाथ में पकड़े हुए नम्बर काड्र्स को भी दिखा रहे थे। मैंने इस बात को तुरंत नोटिस किया और सभी को अपने हाथ में लिए हुए काड्र्स को छुपा देने को कहा।

बच्चों ने ऐसा ही किया और अब इस बात पर चर्चा हुई कि ये चार बच्चे छोटे से बड़े क्रम में खड़े हैं लेकिन इस बार वे अपनी लम्बाई के अनुसार छोटे से बड़े क्रम (दाएं से बाएं) में खड़े हैं जिसे आरोही क्रम कहा जाता है। उसी तरह अब अगर ये बड़े से छोटे क्रम में खड़े हो जायेंगे तो इसे अवरोही क्रम कहा जायेगा। मैंने बच्चों को अवरोही क्रम में खड़ा होने के लिए कहा और बच्चे इस क्रम में खड़े हो गए। इस तरह संख्या की मात्रात्मक समझ को पुख्ता बनाने के लिए संख्या पूर्व अवधारणा को संख्याओं से जोड़कर बताया गया। मुझे लगता है कि ज्यादा से ज्यादा बार इस तरह की प्रैक्टिस से बच्चे संख्या की मात्रात्मक समझ बना सकते हैं।

लेकिन मुझे इस बात का अंदाजा नहीं था कि मैंने इस बार जो TLM काम में लिया है शायद उसकी वजह से ही मुझे काफी स्ट्रगल करना पड़ रहा था। शिवा जी अगले दिन स्कूल आयी। उन्होंने मुझे फीडबैक दिया कि आपने जिस प्रकार से संख्या निर्माण करवाया असल में उससे पहले बच्चों के साथ स्थानीय मान पर काम करना ज्यादा ज़रूरी है। इस प्रक्रिया को असल में मैंने कुछ इस तरह किया था। मैं इकाई के काड्र्स की मदद से 4 अंकों वाली संख्याएं बनाना सिखा रही थी। शायद इसीलिए उन्हें इस कार्य को करने में काफी चुनौतियां भी आयीं जो स्वाभाविक था लेकिन काड्र्स की मदद से बच्चे संख्या निर्माण की अवधारणा के गलत पैटर्न को सीख रहे थे।

मैंने जो प्रक्रिया अपनाई वो थी–

1 और 1, 11

1 और 2, 12 आदि

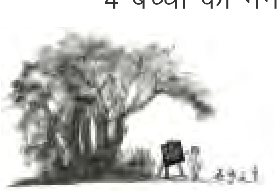

जो फ़्लैश काड्‌र्स इस्तेमाल किये गए थे वो इस तरह के थे–

| 1 | 2 | 3 | 4 |

मुझे तब प्लेस वैल्यू काड्‌र्स के बारे में नहीं पता था। जब हमने बातचीत की तो समझ आया कि सर्वसंभव संख्या बनाने में कोई दिक्कत नहीं है लेकिन इससे पहले बच्चों की स्थानीय मान की समझ पुख्ता होना बहुत ज़रूरी है। अगर ऐसा नहीं हुआ तो बच्चे संख्या बनाने के गलत पैटर्न को पकड़ सकते हैं जिससे आगे चलकर दिक्कत आएगी।

हमने मिलकर योजना बनाई कि हमें आगे कैसे बढ़ना चाहिए इस मुद्दे पर काफी चर्चा हुई।

अचानक प्राथमिक कक्षा के 3 बच्चे पोषाहार लेने स्कूल आये और हमने भी काफी बातचीत कर ली थी तो सोचा क्यों न इसे करके देखा जाए। 2 बच्ची पांचवी में पढ़ रही हैं और एक दूसरी कक्षा में इस साल पढ़ रही हैं। हम बच्चों के साथ दरी पट्टी पर बैठ गए। हमने पहले खूब सारी बातें कीं और बातों ही बातों में अपना काम शुरू किया।

हमने योजना में कार्य को करने के कुछ चरण तय किया–

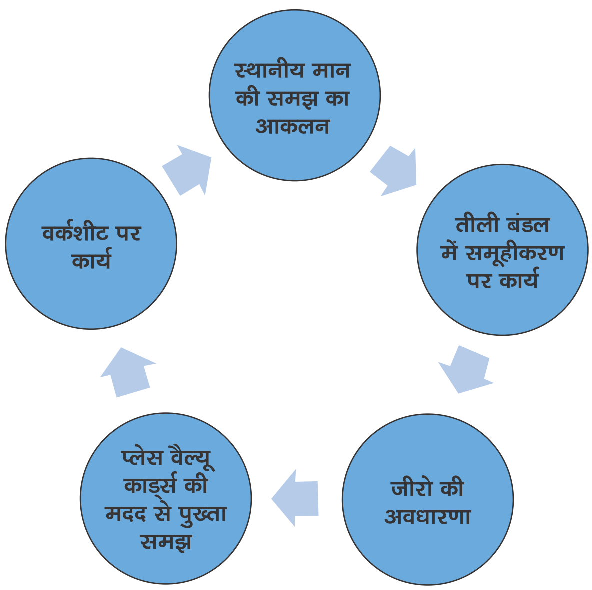

तीली बंडल और प्लेस वैल्यू काड्‌र्स

तो अब मैं आपके साथ अपनी स्थानीय मान की प्रक्रिया के अनुभव और यात्रा साझा करूंगी।

मुझे ऐसा लगता है कि यह काम ऐसे बच्चों के साथ किया जाना चाहिए जिन्हें गिनना आता है, यानी वे गिनकर उतनी ही चीज़ें उठाएं जितनी बोली गयी हों और उन्हें संख्या नाम क्रम से याद हो। बच्चों को अक्सर यह दिक्कत आती है कि वे 13 को 31 लिख देते हैं। उन्हें यह तो पता है कि दो अंक 1 और 3 से मिलकर 13 बनता है लेकिन इसकी जमावट कैसे हो, यही बात उन्हें उलझाती है। इसका सबसे बड़ा कारण मुझे स्थानीय मान की समझ ना होना है। अगर बच्चा ये जान गया कि 13 में 1 और 3 का क्या मतलब है तो वो आसानी से संख्यायें लिखने के पैटर्न को समझ पायेगा।

दूसरी बड़ी परेशानी यह आती है कि बच्चा 0 वाली संख्याओं को समझने में दिक्कत महसूस करता है या उन्हें गलत तरीके से लिख देता है। जैसे 203 को 2003 लिखना। और घटाव के सवाल को कुछ बच्चे 30–8 को 38 लिख देता है। यहाँ पर 3 बातें समझ आ रही है– पहली बात, बच्चा 0 को कुछ नहीं की तरह देखता है और दूसरी बात बच्चा 0 को स्थानीय मान में place होल्डर की तरह नहीं देख पाता और तीसरी बात बच्चे को ग्रुपिंग की समझ नहीं है।

इसके समाधान के लिए ग्रुपिंग सिखाना एक अहम् बात है। ग्रुपिंग (समूहीकरण) सिखाने के लिए हमने तीली बंडल का उपयोग किया। हमने इस प्रक्रिया को करने के लिए एक तरीका अपनाया।

चरण 1

स्थानीय मान की समझ का आकलन

| 1 | 5 | 1 | 0 | बच्चे का जवाब → | 1 | 5 |

हमने पहले बच्चों के सामने प्लेस वैल्यू काड्‌र्स रखे जिससे यह पता चले कि क्या उनको वाकई में स्थानीय मान की समझ है या नहीं। ये काड्‌र्स इस प्रकार थे।

| 1 | 5 | 1 | 0 |

बच्चों से पूछा गया कि इनमें से कौन से काड्र्स की मदद से आप 15 बनाओगे? पांचवी कक्षा की दोनों बच्चियों ने इन दोनों काड्र्स को उठाया और कहा 1 और 5 से। इन दोनों बच्चियों में एक नियमित स्कूल आती है और एक नियमित नहीं है। तो यहाँ पर मैं उस बच्ची के रिस्पान्स को ज्यादा हाईलाइट करूंगी जो नियमित स्कूल आती है, उसका नाम है शिवानी। ऐसा कुछ और काड्र्स की मदद से अलग–अलग संख्याओं के साथ किया गया। तीनों ने उन्हें भी इसी तरह किया।

1	5

इस तरह यह पुख्ता हो गया कि उनकी स्थानीय मान को लेकर समझ नहीं बनी है। शिवानी को जोड़ करना आता था। तो उसे 2 अंकों के हासिल वाले जोड़ दिए गए। उसने इसे ऐसे किया–

$$\begin{array}{r} 1 \\ 14 \\ \hline +\ 7 \\ 21 \\ \hline \end{array}$$

पूछा गया कि हासिल 1 क्यूं लिया तो वह समझ नहीं पायी। उससे फिर पूछा गया कि यहां पर 1 का मतलब क्या है? 10 या 1? उसने जवाब दिया ये तो 1 ही है। बच्चे को इस प्रक्रिया में थोड़ा संकोच भी हो रहा था कि मैम ऐसे सवाल क्यों पूछ रही हैं। फिर बोला गया कि अगर हम हासिल न ले और उसे सीधे–सीधे नीचे लिख दें तो क्या यह भी सही है। उसने कहा पहले तो ऐसा नहीं सिखाया है लेकिन ये भी ठीक ही लग रहा है।

$$\begin{array}{r} 14 \\ +\ 7 \\ \hline 111 \\ \hline \end{array}$$

स्थानीय मान की समझ का आकलन

हासिल एक क्यों?

$$\begin{array}{r} 1 \\ 14 \\ \hline +\ 7 \\ 21 \\ \hline \end{array} \qquad \begin{array}{r} 14 \\ +\ 7 \\ \hline 111 \\ \hline \end{array}$$

इससे यह भी पुष्टि हो पायी कि बच्चे को स्थानीय मान की पूरी समझ नहीं है। मैं फिर से इस बात पर ध्यान लाना चाहूंगी कि यह वो बच्ची थी जो रोज़ स्कूल आती थी और इस कारण इसका लर्निंग लेवल भी अच्छा है।

इन सभी बातों से यह मालूम पड़ा कि बच्चों के साथ समूहीकरण पर काम करने की बहुत आवश्यकता है।

चरण 2

तीली बंडल से समूहीकरण पर कार्य

ग्रुपिंग सिखाने की प्रक्रिया

इसके लिए सबसे पहले बच्चों को कुछ तीलियां दी और कहा गिनकर बताओ कितनी हैं। उन्होंने बताया 17 ।

बच्चे से कहा गया ठीक है अब मैं 17 लिख देती हूं। एक कॉपी में मैंने लिखा 17।

फिर मैंने कहा अब एक काम करते हैं। ये रबर बैंड लो और 17 में से 10 तिल्लियों को बाँध दो। फिर बताया गया कि ये एक 10 का बंडल है।

मैंने कुछ और बंडल बनाने को कहा। उसने ठीक 10 तीलियों के 3 बंडल और बना दिए। फिर उससे पूछा कि एक बंडल में कितनी तीलियां है? उसने कहा 10, फिर पूछा गया कि 2 बंडल में कुल कितनी तीलियां होंगी।

उसने कहा 20। इस प्रकार इस प्रक्रिया का कुछ देर अभ्यास कहा गया। अब बच्चे को यह समझ में आ गया था कि 1 बंडल में 10 तीलियां होती हैं।

चरण 3

''जीरो मने कुछ नहीं'' को ''कुछ चीजों की अनुपस्थिति'' से जोड़ने पर कार्य

जीरो स्थान धारक के रूप में

जीरो की अवधारणा और 10 माने क्या

10 माने क्या?

फिर दोबारा बच्चे से एक बंडल और कुछ खुली तीली से 17 बनाने को कहा गया। बच्चे ने 1 बंडल उठाया और कहा ये हैं 10 और फिर 7 खुली उठाई और कहा ये 7 हो गयी अब इसका भी बंडल बनाना है क्या? बच्चे का सवाल बहुत अच्छा था। मैंने कहा नहीं हमेशा एक बात को ध्यान में रखना, बंडल सिर्फ 10 का ही बनता है। 10 से कम तीलियां खुली ही रहती है। अब हमने इस 1 बंडल और 7 खुले की जमावट को लिखा। मैंने कहा कॉपी में बड़ा–बड़ा 17 लिखो। बच्चे ने ऐसा ही किया। फिर मैंने कहा अब 7 खुली तीलियों को 7 के नीचे रख दो। बच्चे ने जब ऐसा किया तो उससे पूछा कि अब इस 1 बण्डल को कहाँ रखूं? बच्चे ने कहा इसे 1 के नीचे रख देते हैं। मैंने ऐसा ही किया। हम दोनों देख पा रहे थे कि बच्चे ने 17 के चिन्ह और उसकी मात्रात्मक समझ को शायद आपस में जोड़ के देखा है। फिर ऐसे ही कुछ और संख्याएं दीं जैसे 19 और कहा अब 19 तिल्लियां गिनो। बच्चे ने तुरंत 1 बण्डल और 9 खुल्ली तीलियां गिनीं और रख दीं। अब कहा इसे बड़ा–बड़ा लिखो और इन तिल्लियों को लिखी हुई संख्या के नीचे जमाओ। यहां पर यह सवाल भी किया कि क्या 9 खुली तीली का बंडल बना सकते हैं? बच्चे ने कहा नहीं 10 से कम का बंडल नहीं बन सकता, 9 को खुला ही रखना होगा।

इसी तरह अन्य संख्याओं के साथ भी अभ्यास किया गया।

इसके बाद फिर से 17 तीलियों की जमावट रखी और पूछा किस में कितने बंडल और कितनी खुली तीलियां हैं? बच्चे ने कहा 1 बंडल और 7 खुली। फिर हमने योजना अनुसार एक खुली तीली को कम कर दिया और कहा अब कितनी तीलियां हो गयी बच्चे ने कहा 16। उससे पूछा गया कैसे? तो बच्चे ने कहा 1 बंडल है और 6 खुली तीलियां हैं। अब इसको कैसे लिखेंगे? मैंने खुद इसको बोलते–बोलते लिखा– दाई तरफ लिखा 6 और कहा 6 खुली तीली और बायीं तरफ लिखा 1 और कहा एक बंडल। इसी तरह एक–एक तीली निकलते गए और बच्चे कहते गये 5 खुली और 1 बंडल, साथ ही साथ लिखता भी गया। दाई तरफ खुली और बायीं तरफ बंडल की संख्या। बीच–बीच में पूछते गए कि 1 बंडल में कितनी तीलियां हैं? बच्चे ने बताया 10। इसी तरह 14, 13, 12 और 11 तक एक एक तीली कम करते हुए इन संख्याओं को कैसे और क्यूं लिखते हैं बच्चे को समझ आ रहा था। अब एक ही खुली तीली बची थी जिसे हमने उठा लिया और कहा अब बताओ ये कितना हो गया? बच्चे ने कहा अब तो एक ही बंडल बचा है। मैंने पूछा और खुली? बच्चे ने कहा खुली तो एक भी नहीं है। जब एक भी नहीं होता तो हम यहां पर क्या लिख सकते हैं। बच्चे ने शायद अपने पूर्व ज्ञान का इस्तेमाल किया और कहा 0। मैंने कहा हाँ चलो अब इसको भी लिखो कितने खुले और कितने बंडल? बच्चे ने दाईं तरफ लिखा 0 खुले और उसके बायीं तरफ लिखा 1 बंडल। हमने पूछा अच्छा तो फिर ये कितने हो गए? तुमने कितना लिखा है? उसने कहा 10। बच्चे से फिर से पूछा तो इस 10 में 1 का मतलब क्या है? बच्चे ने कहा 1 बंडल है और अगला सवाल पूछने से पहले ही बच्चे ने कह दिया कि 0 खुली तीलियां हैं। ये सच में बहुत ही रोचक प्रक्रिया थी।

फिर मैंने बच्चों को कॉपी में लिखकर बताया कि क्या हम इसे ऐसे भी लिख सकते हैं? 10+3= 13? बच्चे ने कहा हाँ यह सही है। बच्चों को फिर से बताया कि देखो यहाँ पर 1 बंडल को 10 लिखा है और 3 खुले को 3 लिखा है। उनके साथ इस तरह अंकों के विस्तृत रूप के साथ अभ्यास किया। हर बच्चा इस बात को समझ पाया

क्योंकि शायद उसके सामने बंडल और खुली तीलियां पड़ी हुई थीं।

अब एक सवाल जो बहुत महत्वपूर्ण था पूछा गया। 12 लिखने के बाद 1 के नीचे 1 खुली तीली रखी और 2 के नीचे 2 खुली तीली रखी और कहा क्या हम इसे ऐसे भी रख सकते हैं? बच्चे ने कहा नहीं यह गलत है। 1 के नीचे खुला नहीं बंडल आएगा। मैंने कहा ठीक है और अगर तुम इसे गिनोगे तो भी ये कुल 3 तीलियां होंगी। लेकिन 12 का मतलब 1 और 2, 12 नहीं है। इसका मतलब है 10 और 2, 12 । इसी तरह अन्य संख्याओं के बारे में पूछा गया क्या 1 और 4, 14 होता है या 10 और 4, 14 होता है? बच्चों ने थोड़ा सोचा और कहा 1 और 4 तो 5 हो जाएगा। एक बच्चे ने सोचते समय खुली तीलियां उठाकर भी देखा। फिर उसने कहा 10 और 4, 14 हो जायेगा।

इस प्रक्रिया का भी अभ्यास किया गया। अंत में बच्चों को अब प्लेस वैल्यू कार्ड्स दिए गए और दोबारा वही प्रश्न पूछा गया।

चरण 4

प्लेस वैल्यू कार्ड्स की मदद से पुख्ता समझ

अब बताओ 15 कौन से कार्ड्स से बनना चाहिए?

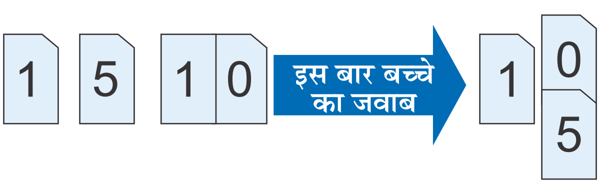

बच्चे ने 5 वाला कार्ड उठाकर 10 वाले कार्ड के ऊपर रख के कहा ऐसे।

बच्चे से पूछा गया कि इनमें से कौन से कार्ड्स की मदद से आप 15 बनाओगे? इसके लिए बच्चे के सामने दोबारा वही तीन कार्ड्स रखे गए। लेकिन इस बार तीनों ही बच्चों ने 5 के कार्ड को 10 के कार्ड के ऊपर जमाया और कहा ऐसे। इस जवाब को देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए, मैंने सोचा नहीं था कि दूसरी कक्षा की बच्ची भी इसे इतनी आसानी से कर देगी।

चरण 5

वर्कशीट पर कार्य

बच्चे द्वारा बनायी गयी वर्कशीट

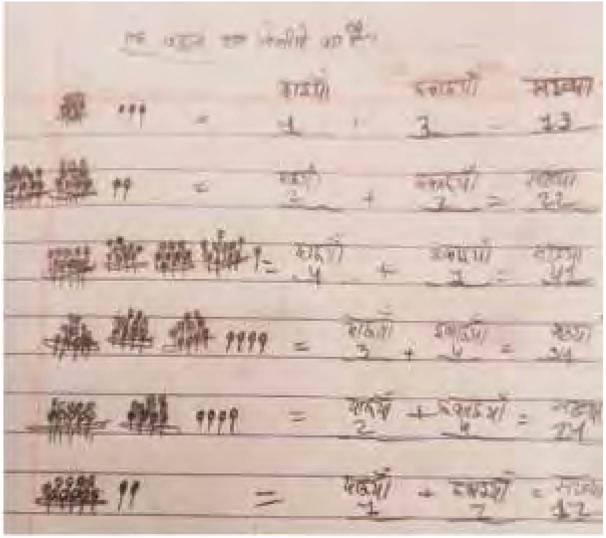

योजना अनुसार बच्चों के साथ एक–दो दिन बाद बच्चों को वर्कशीट पर कार्य देने का सोचा था, कुछ व्यस्तता के कारण अगले दिन ये कार्य नहीं कर पायी। गांव के दौरे पर जब हम सब अगले दिन निकले तो शिवानी मेरे पास दौड़ कर आई और मुझे ये वर्कशीट थमा के चली गयी। मैंने वापस बुलाया और पूछा यह क्या है, उसने बताया कि उसने अपने लिए खुद सवाल बनाये और इसको हल भी किया। मेरे लिए ये काफी भावुक पल था जब बच्चा इतने अच्छे तरीके से इन अवधारणा को न सिर्फ समझा बल्कि खुद ही वर्कशीट भी बना के उसने उसे हल भी किया। इस पूरी प्रक्रिया के बाद मुझे यह समझ आ गया है कि बच्चा अगर इस पैटर्न को समझ गया तो अब सैकड़ा और हज़ार को भी समझ पायेगा। स्थानीय मान की पुख्ता समझ बच्चे को हो पाएगी। जो गलतियां बच्चे अक्सर करते हैं जैसे 13 को 31 भी लिखना या 0 को कुछ नहीं की तरह समझना, इस पूरी योजना के द्वारा ये परेशानियाँ भी कम होंगी ऐसी मेरी आशा है।

(सुमन सोनी राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पीपलू टोंक में अध्यापक हैं और शिवा दीप अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन से जुड़े हैं।)